1979) तथा संचार (एप्पल, 1981) के लिए उपग्रहों की आयोजना, डिजाइन, निर्माण तथा जांच के लिए प्रौद्योगिकी एवं अन्य क्षमतायें विद्यमान हैं।

प्रमोचक राकेट प्रौद्योगिकी के अन्तर्गत इस समय भारत ने पृथ्वी की निकट कक्षाओं में छोटे उपग्रहों को स्थापित करने की सन्तुलित क्षमता प्राप्त कर ली है। ऊपरी वायुमंडलीय अध्ययनों के लिए छोटे परिज्ञापी राकेटों के विकास से प्रारम्भ करते हुए साठवें दशाब्द के अन्त में उपग्रह प्रमोचक राकेट (एस० एल० वी०) के विकास के लिए एक कार्यक्रम बनाया गया था। एस० एल० वी०-3 के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए 1973 में एक सुस्पष्ट समय-बद्ध परियोजना प्रारम्भ की गई तथा जुलाई, 1980 में रोहिणी नामक 35 किलोग्राम भार के उपग्रह को सफलता-पूर्वक कक्षा में स्थापित किया गया। मद्रास के उत्तर में 100 किलोमीटर दूर, भारत के पूर्वी तट पर, श्रीहरिकोटा नामक द्वीप का विकास देश के प्रमुख राकेट तथा उपग्रह प्रमोचन केन्द्र के रूप में किया गया। राष्ट्र उपग्रहों को प्रचालनात्मक सहायता के लिए एक राष्ट्र-व्यापी अनुवर्तन संचार जाल की भी स्थापना की गई है।

अन्तरिक्ष उपयोगों के अन्तर्गत उपग्रह संचार (दूरदर्शन प्रसारण सहित), सुदूर संवेदन, मौसमविज्ञान' भू-गणित और मानचित्रकला के क्षेत्रों में काफी कार्य किया गया है। उपग्रह शैक्षणिक दूरदर्शन परीक्षण (साइट 1975-76), उपग्रह दूरसंचार परीक्षण परियोजना (स्टेप 1977-79) तथा मानसून परीक्षण (मोनेक्स 1979) जैसे अनेक सफल परीक्षणों के दौरान प्राप्त क्षमताओं की जांच करके उनका विस्तार किया गया है। इन सभी परीक्षणों में, कार्यप्रणाली का प्रमुख तत्व तंत्र इंजीनियरी तथा हार्डवेयर निर्माण दोनों में, आत्म-निर्भरता ही रहा है।

इन्सैट-1ए अन्तरिक्षयान की कक्षा में अप्रत्याशित तथा दुर्भाग्यपूर्ण असफलता न हुई होती तो अन्तरिक्ष प्रौद्योगिकी का उपयोग करते हुए राष्ट्रीय लम्बी दूरी के दूरसंचार जन-संचार तथा मौसमविज्ञान संबंधी सेवाओं के क्षेत्र में नये आयाम खुल गये होते। फिर भी, 1983 की तृतीय तिमाही में इन्सैट-1 बी के संभावित प्रमोचन से इन्सैट-1 प्रणाली शीघ्र ही इस बाधा पर काबू पा लेगी। तथा देश में दूरसंचार रेडियो/दूरदर्शन प्रसारण और मौसम की भविष्यवाणी संबंधी क्षमताओं का संवर्धन करेगी।

भारतीय अन्तरिक्ष कार्यक्रम, इसके उद्देश्यों, उपलब्धियों इत्यादि का ब्यौरा 1980-90 के स्वीकृत अन्तरिक्ष प्रोफाइल में दिया गया है, जिसे 20-8-1981 को राज्य सभा के पटल पर प्रस्तुत किया गया था। अन्तरिक्ष विभाग के कार्यक्रम और कार्य-निष्पादन का ब्यौरा वार्षिक रिपोर्टों में दिया गया है, जिसकी प्रतियां संसदीय पुस्तकालय में उपलब्ध हैं।

हिन्दी का प्रयोग

2665. **श्री जगदम्बी प्रसाद यादव :** क्या उद्योग मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) उनके मंत्रालय को कितने हिन्दी अधिकारियों, अनुवादकों, संपादकों टंककों और आशुलिपिकों की आवश्यकता है तथा उनकी वर्तमान संख्या क्या है और क्या वर्तमान संख्या उनकी स्वीकृत संख्या से कम है ?

(ख) यदि हां, तो रिक्त स्थानों को कब तक भरे जाने की संभावना है तथा उनकी पदोन्नति और पुष्टि के संबंध में क्या स्थिति है ;

(ग) एक माह तथा साल में हिन्दी में प्रकाशित विभिन्न पत्रिकाओं की संख्या

कितनी है तथा मंत्रालय के पुस्तकालय में हिन्दी अंग्रेजी पुस्तकों का अनुपात क्या है ;

(घ) संदर्भ पुस्तकों को किस भाषा में तैयार किया जाता है तथा पुस्तकालय में हिन्दी समाचार-पत्रों तथा पत्रिकाओं की स्थिति क्या है ; और

(ङ) हिन्दी प्रशिक्षण के संबंध में क्या स्थिति है तथा इस संबंध में क्या कदम उठाए गए हैं ?

उद्योग मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री वीरभद्र सिंह) (क) हिन्दी अधिकारियो, अनुवादकों, सम्पादकों, टाइपिस्टों और आशुलिपिकों की स्वीकृत तथा विद्यमान संख्या निम्नलिखित है:--

पदनाम	स्वीकृत	विद्यमान	टिप्पणी
वरिष्ठ हिन्दी अधिकारी	1	1	कुछ नही
उपसम्पादक	2	2	
हिन्दी अधिकारी	5	5	कुछ नहीं
वरिष्ठ हिन्दी अनुवादक	8	4	इन पदों को, जो हाल ही में खाली हुए हैं, भरे जाने के लिए कार्रवाई की जा रही है ।
कनिष्ठ हिन्दी अनुवादक	9	7	--वही--

कुछ आशुलिपिक/टाइपिस्ट हिन्दी टाइप जानतें हैं ।

(ख) इस अंतर को पूरा करने के लिए कार्रवाई पहले ही आरम्भ कर दी गई है। राजभाषा विभाग द्वारा 19-9-81 से कनिष्ठ/वरिष्ठ हिन्दी अनुवादकों के पदों को केन्द्रीय सचिवालय राजभाषा सेवा संवर्ग में शामिल कर लिया गया है । इन क्षेणियों के कर्मचारियों की पदोन्नति उन्हें स्थायी करने का कार्य उस विभाग द्वारा 19-9-1981 से किया जायेगा । वरिष्ठ हिन्दी अधिकारियों और हिन्दी अधिकारियों के पदों को संवद्ध करने के प्रश्न पर राजभाषा विभाग द्वारा सक्रिय रूप से विचार किया जा रहा है ।

(ग) हिन्दी में प्रकाशित होने वाली मासिक पत्रिकाओं (लघु उद्योग समाचार और जिला उद्योग समाचार) की संख्या 2 है और वार्षिक प्रकाशित होने वाली पत्रिका (सीमेंट उत्पादन तथा प्रेषण) की संख्या एक है । उपर्युक्त तीनों पत्रिकाएं द्विभाषी रूप में प्रकाशित होती हैं । मंत्रालय में हिन्दी/अंग्रेजी की पुस्तकों का अनुपात 1.44 है ।

(घ) इस मंत्रालय द्वारा कोई भी संदर्भ-पुस्तिका प्रकाशित नहीं की जाती । पुस्तकालय में हिन्दी की पुस्तकों समाचार-

पत्रों और पत्रिकाओं की स्थिति निम्न प्रकार है :—

हिन्दी-पुस्तकों की संख्या		1384
समाचार-पत्र	(1)	नवभारत टाइम्स
	(2)	हिन्दुस्तान
पत्रिकाएं	(1)	लोक प्रशासन (तिमाही)
	(2)	भाषा (तिमाही)
	(3)	कादम्बिनी (मासिक)
खरीदी जाने वाली	(4)	नवनीत (मासिक)
	(5)	सरिता (पाक्षिक)
	(6)	धर्मयुग (साप्ताहिक)
	(7)	साप्ताहिक हिन्दुस्तान (साप्ताहिक)
	(8)	रविवार (साप्ताहिक)
निशुल्क	(1)	उद्योग व्यापार पत्रिका (मासिक)
	(2)	आविष्कार (तिमाही)

(ङ) मंत्रालय के 80 प्रतिशत से अधिक कर्मचारियों को हिन्दी का कार्य-साधक ज्ञान है। हिन्दी न जानने वाले कर्मचारियों का विवरण जानने के लिए एक रोस्टर रखा गया है, जिन्हें राजभाषा विभाग की हिन्दी शिक्षण योजना के अधीन हिन्दी का प्रशिक्षण दिलाने के लिये वर्गों (बैचों) में प्रायोजित किया जाता है। टाइपिस्टों और आशुलिपिकों को भी हिन्दी टाइप और हिन्दी आशुलिपि में प्रशिक्षित कराने के लिए प्रायोजित किया जाता है।

सार्वजनिक क्षेत्र के उद्यमों का कार्यकरण

2666. **श्री जगदम्बी प्रसाद यादव :** क्या इस्पात और खान मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) उनके मंत्रालय के अधीन सार्वजनिक क्षेत्र के उद्यमों के कार्यकरण तथा प्रगति के संबंध में क्या स्थिति है ;

(ख) क्या उसका कोई मूल्यांकन किया गया है, यदि नहीं, तो इसके क्या कारण हैं ; और

(ग) उनके मंत्रालय में राजभाषा के प्रचार तथा उसमें कार्य करने वाले हिन्दी कर्मचारियों की पदोन्नति और पुष्टि की संभावनाओं के संबंध में क्या स्थिति है ?

इस्पात और खान मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री एन० के० पी साल्वे) : (क) और (ख) सरकारी क्षेत्र के सभी उपक्रमों के कार्यकरण की स्थित विभागों की वार्षिक रिपोर्टों में दिखाई जाती है और ये रिपोर्टें संसद में प्रस्तुत की जाती हैं। जब उपक्रमों की वार्षिक रिपोर्टें संसद में प्रस्तुत की जाती है तो उसके साथ उनके कार्यकरण की सरकार द्वारा समीक्षा भी प्रस्तुत की जाती है।

(ग) केन्द्रीय सरकार की नीति के अनुसार हिन्दी के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए प्रयास किए जाते हैं। इस्पात और खान मंत्रालय में हिन्दी के पद केन्द्रीय सचिवालय राजभाषा सेवा में शामिल है और इस सेवा का संवर्ग राजभाषा विभाग द्वारा बनाया जा रहा है। इस संवर्ग के अन्तिम रूप से बन जाने तक सम्बन्धित विभागों द्वारा तदर्थ आधार पर नियुक्तियां/पदोन्नतियां की जा रही हैं।

Research in the field of Atom

2667. SHRI VITHALRAO MADHAVRAO JADHAV: Will the PRIME MINISTER be pleased to state:

(a) what is the progress made so far in the field of proton research; and

(b) what are the future plans for research in electron, porton and neutron?

THE MINISTER OF STATE IN THE DEPARTMENTS OF SCIENCE AND TECHNOLOGY, ATOMIC ENERGY, SPACE, ELECTRONICS AND OCEAN DEVELOPMENT (SHRI SHIVRAJ V. PATIL): (a) and